महानवमी व्रत कथा PDF

एक बार बृहस्पति जी ने ब्रह्मा जी से पूछा हे श्रेष्ठ ब्रह्मा जी यह नवरात्रि का त्यौहार चैत्र और आश्विन मास के शुक्ल पक्ष में ही क्यों मनाया जाता है? क्या होता है इस व्रत का फल, कैसे करना उचित है? यह व्रत सबसे पहले किसने किया था? तो विस्तार से बताये।

बृहस्पतिजी का ऐसा प्रश्न सुनकर ब्रह्माजी ने कहा– हे बृहस्पति! आपने जीवों के कल्याण के लिए बहुत अच्छा प्रश्न किया है। जो मनुष्य मनोकामना पूर्ण करने वाले दुर्गा, महादेव, सूर्य और नारायण का ध्यान करते हैं, वे लोग धन्य हो जाते हैं। यह नवरात्रि का व्रत सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है। ऐसा करने से पुत्र चाहने वाले को पुत्र, धन चाहने वाले को धन, ज्ञान चाहने वाले को ज्ञान और सुख चाहने वाले को सुख प्राप्त होता है। इस व्रत को करने से बीमार व्यक्ति की बीमारी दूर हो जाती है। मनुष्य की सभी विपत्तियाँ दूर होती हैं और घर में समृद्धि बढ़ती है, बांझ को पुत्र की प्राप्ति होती है। सभी पापों से छुटकारा मिल जाता है और मन की इच्छा पूरी हो जाती है।

जो मनुष्य इस नवरात्रि का व्रत नहीं करता, वह अनेक दुःखों को सहता है, पीड़ा और व्याधि से ग्रस्त होता है, अंगहीन हो जाता है, सन्तान नहीं होता, धन–धान्य से रहित हो जाता है, भूख–प्यास से व्याकुल होकर इधर–उधर भटकता रहता है और निरर्थक हो जाता है। जो पतिव्रता स्त्री इस व्रत को नहीं करती, वह अपने पति के सुख से वंचित हो जाती है और अनेक दुखों को भोगती है। यदि व्रती पूरे दिन उपवास करने में असमर्थ हो तो उसे एक बार भोजन करना चाहिए और दस दिनों तक अपने स्वजनों सहित नवरात्रि व्रत की कथा सुननी चाहिए।

हे बृहस्पति! ब्रह्मा जी ने कहा है बृहस्पति जिसने भी यह व्रत पहली बार किया था मैं उसकी कथा आपको सुनाने जा रहा हूं तो कृपया मुझे ध्यान से सुनना यह सब सुनने के बाद बृहस्पति जी ने कहा – हे मनुष्यों का कल्याण करने वाले

pdfinbox.com

ब्राह्मण, मुझे इस व्रत का इतिहास बताओ, मैं ध्यान से सुन रहा हूं। जो आपकी शरण में आया है, उस पर कृपा कीजिए।

ब्रह्माजी ने कहा– प्राचीन काल में मनोहर नगर में पीठात नामक अनाथ ब्राह्मण रहता था, वह भगवती दुर्गा का भक्त था। सुमति नाम की एक अत्यंत रूपवती कन्या उत्पन्न हुई जो अपने समस्त गुणों से युक्त थी। वह कन्या सुमति सखियों के साथ अपने पिता के घर में खेलती हुई इस प्रकार बढ़ने लगी, जैसे दीप्त पक्ष में चन्द्रमा की कला बढ़ जाती है। उसके पिता प्रतिदिन जब दुर्गा पूजा कर होम करते थे तो वह नियमित रूप से वहां उपस्थित रहती थी। एक दिन सुमति अपनी सखियों के साथ खेलकूद में लग गई और भगवती की पूजा में शामिल नहीं हुई। बेटी की ऐसी लापरवाही देखकर उसके पिता को गुस्सा आ गया और वह बेटी से कहने लगे, अरे दुष्ट बेटी! आज तुमने भगवती की पूजा नहीं की, इसलिए मैं तुम्हारा विवाह किसी कुष्ठ रोगी या निर्धन व्यक्ति से कर दूंगी।

पिता की यह बात सुनकर सुमित को बहुत ही दुख हुआ और सुमित ने अपने पिता से कहा हे पिताजी! मैं आपकी बेटी हूं और मैं हर तरह से आपके अधीन हूं, जैसा आप चाहें वैसा करें। मेरा विवाह किसी राजा, पहलवान, गरीब या किसी से भी कर लो, लेकिन मेरे भाग्य में जो लिखा है वही होगा, मेरा दृढ़ विश्वास है कि जो जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है, क्योंकि कर्म करने से मनुष्य बनाता है यह भगवान के अधीन है, लेकिन फल देना भगवान के अधीन है।

जैसे अग्नि में गिरकर त्रिनादि उसे और अधिक प्रकाशित करता है। इस प्रकार कन्या के निर्भय वचन सुनकर वह ब्राह्मण क्रोधित हो गया और अपनी पुत्री का विवाह एक पहलवान से करवा दिया और अत्यंत क्रोधित होकर कन्या से कहा– हे पुत्री! कर्मों का फल भोगो, देखो भाग्य के भरोसे क्या करते हो? पिता के ऐसे कटु वचन सुनकर सुमति मन ही मन सोचने लगी– अरे! मेरा भाग्य बहुत ही खराब है कि मेरी शादी ऐसे व्यक्ति से हुई ऐसा कहते हुए वह कन्या अपने पति

Pdfinbox.com

के साथ 1 के लिए प्रस्थान कर गई और उस निर्जन वन में भयंकर कुशायुक्त के साथ बड़ी पीड़ा के साथ वह रात बिताई।

pdfinbox.com

pdfinbox.com